International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में भाषा एवं शैली

CHAKATE SUNITA PANDURANGARAO, RESEAECH SCHOLAR

DEPARTMENT OF HINDI OPJS UNIVERSITY CHURU (RAJ)

DR. MEENU, ASSOCIATE PROFESSOR

DEPARTMENT OF HINDI OPJS UNIVERSITY CHURU (RAJ)

सार

कृष्णा सोबती का स्वस्थ लेखन ही उनके सफल जीवन का परिचायक है। कृष्णा जी के उपन्यासों में भाषा की शुद्धता का आग्रह दिखाई नहीं देता। अंग्रेजी, उर्दू के शब्द और वाक्य उनकी औपन्यासिक कृतियों की भाषा में घुल–मिल गए है। कई अंग्रेजी शब्दों का हिन्दीकरण भी प्रयुक्त हो चुका है। मुहावरेदार भाषा परिलक्षित होती है। मुहावरों में सोबती जी के अनेक अनेक मौलिक प्रयोग देखे जा सकते हैं। शब्द प्रयोग की कुछ अन्य विशेषताएँ भी दृष्टिगोचर होती है। कई शब्दप्रयोग प्रत्येक आधे शब्द पर बल देकर उसे पूरा बना देते हैं। कई उपन्यासों की शैली व्यंग्यात्मक और नाटकीय है। वहाँ भावुकता का आवरण न होकर जोश और उत्तेजना का मर्दाना स्वर मुख्य रूप से उभर आता है। कृष्णा जी के उपन्यास महाकाव्यात्मक और लघु उपन्यासों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। अपने उपन्यास लेखन में कृष्णा जी ने शहरी एवं ग्रामीण परिवेश तथा समाज जीवन को सहजता तथा यथार्थ रूप से उजागर किया है और हिन्दी उपन्यास साहित्य को यही उनकी देन है।

कुंजीशब्द *कृष्णा सोबती , कथा साहित्य , भाषा ; शैली*

प्रस्तावना

भाषा शैली एवं शिल्प विधान

प्रत्येक समर्थ रचनाकार अपना एक विशिष्ट शिल्प विकसित करना चाहता है। इसी के कारण रचानाकार की साहित्य में अपनी एक पहचान बनती है। स्वातंत्र्योतर कथाकारों ने शिल्प के विभिन्न प्रयोग किए हैं। अज्ञेय ने श्शेखर एक जीवनीश और श्नदी के द्वीपश उपन्यासों में शिल्प के क्षेत्र में विभिन्न प्रयोग किये हैं। जैसे कथानायकों और नायिका के बीच संवाद, आत्मकथात्मक शैली, फ्लैश बैक शैली और अन्य प्रसिद्ध कवियों ने उद्धरण आदि का प्रयोग किया था। भैरव प्रसाद गुप्त, यशपाल, अमृतराय, जैनेन्द्र, धर्मवीर भारती, इलाचंद जोशी आदि ने भी अपनी कलाकृतियों में निज के शिल्प विधान को विकसित करने का प्रयत्न किया है । रचनागत शिल्प विधान के अंतर्गत ही भाषा–शैली, बिम्ब, प्रतीक,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मिथक, फैन्टसी के साथ–साथ संरचनागत लय, तुक, ताल, रिदम, अनुप्रास, अलंकार, लोकोक्ति, मुहावरे, लाक्षणिकता और व्यंजना आदि तत्व आते हैं। सामाजिक, ऐतिहासिक परिवर्तन के साथ ही शिल्प संरचना में भी परिवर्तन हो जाता है। सौ दो सौ वर्ष पहले की कहानी की संरचना इस प्रकार होती थी श्एक था राजा एक थी रानीश पर वर्तमान दौर की कहानी की संरचना किसी भावबोध मूड, अभिव्यक्ति, प्रवृति, प्रकृतिदृश्य, वर्णन या काल्पनिक बिम्ब से प्रारंभ हो सकती है। आज शिल्प संरचना का संबंध युग की अंतर्जटिलताओं से जुड़कर संश्लिष्ट बन गया है।

इस संदर्भ में रामविलास शर्मा का भी यही मत है कि ष साहित्य का शिल्प, उसके विभिन्न रूप सामाजिक विकास से ही संभव हुए है। ये उसपर बहुत कुछ निर्भर होते हैं। और यह बात भी आकस्मिक नहीं है कि हर प्राचीन साहित्य में महाकाव्य साहित्य का मुख्य रूप बताया गया है। जनता तक साहित्य पहूँचाने के साधनों में जो परिवर्तन हुए उनका प्रभाव उनके रूपों पर भी पड़ा। लेकिन रूप और विषय वस्तु में वे वस्तु के महत्व को स्वीकारते हुए कहते हैं "साहित्य में रूप और वस्तु एक दूसरे से सम्बद्ध ही नहीं होते हैं बल्कि एक दुसरे को प्रभावित भी करते हैं ।.....

भाषा शैली एवं प्रयोगात्मक पक्ष

साहित्यकार अपने भावों और विचारों को सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करना चाहता है। अभिव्यक्ति एक क्ला है । जिसमें भावों और विचारों को आकर्षक ढंग से संजोया जाता है। इसके प्रमुख रूप से दो माध्यम है – भाषा और शैली। साहित्यकार अपनी अनुभूति को इस रूप में वर्णन करता है कि वह पात्र की अनुभूति बन जाय। इसमें भाषा–शैली का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा के बिना साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह साहित्य का रूप भी है और आत्मा भी। राजेन्द्र यादव का कहना है " सवेदना की तहों में बिखरी जीने की आकांक्षा के शब्दों में बीन कर जब हम अपने पात्रों के माध्यम से तत्कालीन परिवेश में सांस लेते है, उसे अतिकान्त करते है या इस प्रयास में टूटते है तो सार्थक रचना जन्म लेती है। –भाषा के संबंध में कृष्णा सोबती के कुछ विचार इस प्रकार है ष्भाषा इस लोक की जीवंतता का रोमांस है। विचार की उत्तेजना, प्रखरता, गहराई, एकांत की बेआहट को, प्यार और न प्यार के द्वन्द को, घर –परिवार के शोर और जंगल के मौन को मन की खिड़की से टकराते तनाओं के पंखों से, फड़फड़ाहट की छुअन से ह्रास और उल्लास से, भला क्या . है जो भाषा अंकित नहीं कर सकती। भाषा में निहित है प्रकृति और समस्त संसार का संवेदन। ऐसा कुछ भी नहीं जिसे शब्द व्यक्त न कर सके। वे अपने होने के अधिकार से चाल को विराम देते है। तेज रफ्तार को थाम लेते हैं। प्रवाह को बिंध देते है, चीर देते हैं। जीवन और मरण को शब्दों की सत्ता से भांफ लेते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"जीवन का अंकन करने में भाषा का सादगी या उसका दो टूकपन किसी भी अलंकृत शैली से आगे और ऊपर है। अच्छी भाषा विचार की जटिलता और दुरूहता को अपनी गहराई से सरल और सुथरा करती है।

"जिस भाषा को आप जीते नहीं, जिन शब्दों से आपके लगाव नहीं, सरोकार नहीं, जानकारी मात्र से आप उन्हें सृजन के स्तर पर शैली के बुनावट में सँजो नहीं सकते। उन्हे फूहड़पन से सजा भले ले।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भाषा शैली एवं शिल्प विधान का अध्ययन
2. शिल्प विधान एवं शिल्प वैशिष्ट्य का अध्ययन

भाषा – शिल्प

विचार सम्प्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा का संबंध समाज और मनुष्य दोनों से है। साहित्यकर की सफलता तो पूर्णतः भाषा पर ही आश्रित है । लॉज का कहना है –ष उपन्यासकार का माध्यम भाषा है। वह उपन्यास की हैसियत से जो कुछ करता है,भाषा में तथा भाषा के माध्यम से करता है।

इसप्रकार कथा साहित्य की रचनाशीलता में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। भाषा ही उपन्यास कहानी को गतिशील अर्थशीलता,अर्थवर्ता और मूलकता प्रदान करती है। भाषा मूलतरू मनुष्य के आन्तरिक भावों एवं संवेदन का माध्यम होती है । नामवर सिंह के अनुसार श्भाषा संप्रेषण से पहले संवेदन का माध्यम है। इस प्रकार वह हमारे संवेदन का नियमन करती है। जिसे हम अपना अनुभव और अपना अन्वेषण समझते है. उसमें कितना अपना है और कितना सार्वजनिक भाषा का यह बोध किसी भी विवेकशील व्यक्ति की नींद खो देने के लिए काफी है।

सभी उपन्यासों में भाषा का रूप एक सा न होकर भिन्न भिन्न प्रकार का रहता है। उपन्यास के उद्देश्य, कथ्य, वातावरण तथा विषय के अनुसार भाषा का अपना एक स्तर होता है जो उपन्यासकार की शैली के अनुरूप व्यक्त होता है। कथा साहित्य के विकास के साथ ही उसमें भाषा की दृष्टि से भी परिवर्तन होता गया है।

प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों में भाषा के परिष्कार और प्रयोग की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया। अधिकतर उपन्यास ठेठ सपाट बयानी के ढंग से या वर्णनात्मक भाषा में ही लिखे जाते थे। मनोरंजन प्राधान्य होने के कारण इन उपन्यासों की भाषा अनुभव और जीवनगत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यथार्थ की अभिव्यक्ति से काफी दूर रहीं है, इसी कारण उसमें वह प्रवाह,नुकीलापन, गहनता तथा सम्प्रेषणतीव्रता नहीं आ पाई है। शायद इसीलिए परंपरागत उपन्यासों की आलोचना में भाषा तत्व की चर्चा को आवश्यक नहीं समझा गया। इस सन्दर्भ में देवकीनन्दन खत्री का चन्द्रकांता, गोपालराम गहमरी के जासूसी उपन्यास तथा किशोरीलाल गोस्वामी के सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास उल्लेखनीय है।

आधुनिक उपन्यासकार अपने परिवेश, जीवन, जगत, अनुभव तथा साहित्यिक दायित्व के प्रति अत्याधिक सजग है। रचनाकारों का भाषा बोध उनकी कृतियों में एक शक्तिमान वास्तविकता बनकर उभरा है। इनका मुख्य उद्देश्य अनुभव को संप्रेषित करना है। प्रेमचन्द अपने युग का यथार्थ चित्र पाठक के समक्ष रखना चाहते थे। इसीलिए जनता की समस्ययाओं को उन्ही की भाषा में प्रस्तुत किया है।

एक उदाहरण देखिए होरी एक सच्चे ग्रामीण की भांति अपनी पत्नी से कहता है ष्जो बात नहीं समझती उसमें टांग क्यो अड़ाती है। भाई, मेरी लाठी दे दे और अपना काम देख। यह इसी मिलते–जुलते रहने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है। जब दूसरे के पाँवों तले अपनी गर्दन दबी हुई है तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है।श्श (10) स्वातंत्र्योतर भारतीय समाज मे अनेक विचारधाराओं का विकास हुआ। इन विचारधाराओं ने सामान्य जनजीवन को प्रभावित किया तथा इसके साथ ही उपन्यास की भाषा को भी प्रभावित किया। मार्क्सवादी,मनोवैज्ञानिक और अस्तित्ववादी विचारधारा से प्रभावित जो उपन्यास लिखे गये हैं उनमें उन्हीं के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। नागार्जुन, यशपाल, जैनेन्द्र और अज्ञेय आदि के उपन्यासों की भाषा इसके अच्छे उदाहरण है। मनोवैज्ञानिक– उपन्यासों ने भाषा को औरसशक्त बनाया है। अचेतन मन की गुत्थियों को बताने के लिए उसी के अनुकूल भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है। इन उपन्यासों की भाषा में भी खोया–खोयापन सा आने लगा है। जैसे शेखर का स्वगत कथन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है श्शेखर अपने भीतर कुरेद कर देखो। क्या कोई धनात्मक राशि, कोई विश्वास, वहाँ नहीं है, केवल ऋण ही ऋण है, दर्द से भी बड़ा विश्वास शायद हो अपने में विश्वास यानि अहंकार। क्या वह उद्देश्य हो।

स्वातंत्र्योतर महिला उपन्यासकारों ने कथा लेखन में अपनी अच्छी पहचान बनायी है। अपनी रचनात्मक प्रतिभा के आधार पर उन्होंने जिस प्रकार कथावस्तू का चयन, कथानक का निर्माण अपने मौलिक ढंग से किया है उसी प्रकार उनका प्रस्तुतीकरण भी स्वतंत्र एवं मौलिक रूप से किया। मन्नू भंडारी का आपका बंटीश, उषा प्रियम्बदा का श्रूकोगी नहीं राधिकाश, कृष्णा सोबती का 'सुरजमुखी अंधेरे केश और श्यारों के यारश, कांता भारती का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

श्रेत की मछली अलावा स रागवी का श्कलिकथा वाया बाइपासश आदि उपन्यास उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं।

भाषा का प्रयोगात्मक पक्ष

वर्तमान युग के कथाकारों ने आधुनिक मानव की जटिल मनोवृत्ति को व्यक्त करने के लिए अर्थपूर्ण प्रतीकों का प्रयोग किया है। प्रतीकों के सार्थक प्रयोग से न केवल भाषागत सौन्दर्य ही बढ़ता है अपितु रचनागत प्रक्रिया में कुछ खासियत भी नजर आने लगती है। महिला कथाकारों में यह विशेषता देखी जा सकती है। मन्नू भण्डारी उषा प्रियम्वदा, निरूपमा सेवती आदि ने अपने कथा साहित्य में प्रतीकों का सफल प्रयोग किया है।

कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में प्रतीकों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया है। सोबती जी की श्बादलों के घेरेश, श्दो राहें रू दो बाहेंश आदि कहानियाँ प्रतीकात्मक है। श्बादलों के घेरेश कहानी का शिर्षक स्वयं ही प्रतीकात्मक है– रोहिणी के अनुसार श्बादलों के घेरे श में घीरने की बेबसी है। बादलों के घेरे मौत के अहसास का प्रतीक है। पहाड़ी क्षेत्र के ये बादल बनते है, उमड़ते है, घिरते है और वहीं–वहीं मंडराकर तिरोहित हो जाते है पुनरू लौट आने को। ये बादल सूखे है, बरसना नहीं जानते। अतरू इनकी शुष्क भारी उपस्थिति झेलना पात्रों की नियति है।[६]

इस कहानी में ही प्रतीक से सम्बन्धित एक प्रसंग दृष्टव्य है " मन्दिर के बंद कपाटों के आगे माथा टेक मन्नो उठी तो मानो मन्नो सी नहीं लग रही थी। ऐसे देखा कि यह झुकी मन्नो नहीं मन्नों की व्यर्थ हो गयी विवशता थी, जिसने भाग्य के इन कपाटों के आगे माथा टेक दिया था।

यह मन्दिर के बंद कपाट मन्नो के भाग्य के बन्द कपाट के समान है। मन्नो की रोगग्रस्त जिन्दगी उसके लिए एक विवशता है। उसकी विवश जिन्दगी भाग्य के बन्द कपाटों के आगे नतमस्तक है। अर्थात नकारात्मक स्थिति से गुजरती हुई जीवन की हार को अपनाने की विवशता उस पर छाया की तरह मंडराती रहती है। वही छाया भाग्य के सामने माथा टेकने वाली मन्नो पर और भी काली पड़ जाती है।

शैली संबंधी परिप्रेक्ष्य

साहित्य की रचना विविध प्रणालियों तथा रीतियों से होती है। इन प्रणालियों एवं रीतियों को ही रचनाशैली कहा जा सकता है। यहाँ सोबती जी के रचनाशैली पर विचार किया जाएगा

शैली विवेचन –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शैली शिल्प का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। आधुनिक काल में इस शैली को अंग्रेजी – स्टाइल का पर्याय मान लिया गया है। संस्कृत विद्वानों ने शैली को रीति कहा है ष आचार्य वामन ने काव्यालंकार सूत्र में रीति का विश्लेषण करते हुए उसे विशिष्ट पद रचना कहा है। यहाँ विशिष्ट शब्द का अर्थ हैं गुणयुक्त अर्थात शैली को रचना का गुण माना जा सकता है। इसलिए प्रसिद्ध फ्रांसिसी उपन्यासकार स्तान्धाल ने भी शैली को अच्छी रचना का गुण मानते हुए कहा है ष्शैली का अस्तित्व इसमें निहित है कि दिए हुए विचार के साथ उन सब परिस्थितियाँ को जोड़ दिया जाए, जो कि उस विचार के अभिमत प्रभाव को संपूर्णता में उत्पन्न करने वाली है।

इस संदर्भ में बनार्ड शा का भी यही विचार है कि ष्प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही शैली का अर्थ और इति है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शैली अभिव्यक्ति के प्रकार विशेष से संबंध रखती है । लेखक का विशेष ढंग जिससे वह अपने लक्ष्य की पूर्ति करता है, शैली है। हिन्दी साहित्य कोष में शैली को इसी आधार पर परिभाषित किया गया है। श्शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरिकों का नाम है जो उस विषय वस्तु की आभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते है।

शैलीगत प्रयोग –

(क) वर्णनात्मक शैली

कथा लेखन की परम्परागत और सबसे अधिक प्रचलित वर्णनात्मक शैली है। कि ! की अधिकतर भाषाओं में अनेक कहानियाँ एवं उपन्यास इस शैली में लिखे गए है। कहानियों की तो यह प्रिय शैली रही हैं। ष्इसमें कहानीकार तटस्थ दृष्टा की भाँति कहानियों और पात्रों की मनरूस्थितियों का विवरण चुस्त–दुरूस्त भाषा में देता जाता है। इस प्रकार की कहानियों में लेखक को अपनी बात कहने की पूरी छूट रहती है। उसकी अभिव्यक्ति पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं रहता।ष (57)

इस शैली का प्रयोग उपन्यासों में भी खूब होता है। इस शैली के उपन्यासों की कथावस्तु, पात्र तथा स्थितियों का वर्णन उपन्यासकार तृतीय पुरूष के रूप में करता है। भूत, वर्तमान, भविष्य से संबंधित घटनाओं का वर्णन इस शैली के द्वारा ही होता है। प्रत्येक कहानियों एवं उपन्यासों में कम या अधिक मात्रा में वर्णनों की उपस्थिति रहती ही है। बिना वर्णन के कथा साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रेमचंद युग के अधिकतर कहानियाँ एवं उपन्यास इसी शैली में लिखे गए हैं। प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासकारों ने भी इस शैली

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को अपनाया है। इस सन्दर्भ में प्रेमचंद, सुर्दशन, जयशंकर प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर.....आदि के नाम उल्लेखनीय है।

महिला कथाकारों ने भी अपने कथा साहित्य में इस शैली का प्रयोग किया है। इनमें उषा प्रियम्वदा, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग और कृष्णा सोबती के नाम लिए जा सकते हैं। कृष्णा सोबती की कहानियों एवं उपन्यासों में प्रायरू इस शैली का प्रयोग किया गया है । सोबती जी ने कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया है। सोबती जी की कहानियों में वर्णनात्मक शैली के उदाहरण इस प्रकार है– "धन्नों ने चबुतरे की दाहिनी ओर सीढ़ियों पर से बिहारी सेठ के लड़के को उतरते देखा नहाया–धोया, साफ–सूथरे कपड़े। पतले अकड़े कुरते पर सोने के बटन। बारिक चुन्नट और मुह में पान। इतना गोरा, इतना साफ। कटरे में तरह तरह की सूरत देखकर कभी धन्नों का मन होता था ऐसे आदमी के लिए।श्श(58) धन्नों के इस कथन से वेश्या के हृदयगत भावों का पता चलता है। किसी भी औरत का वेश्या बनना शौक नहीं, मजबूरी होती है। तरह–तरह के व्यक्ति के साथ संबंध बनाने की अपेक्षा वह किसी एक अच्छे व्यक्ति के साथ जीवन गुजारने को सोचती है।

आत्मकथात्मक शैली – वर्तमान युग में अधिकांश कथा साहित्य इसी शैली में लिखा जा रहा है। इस शैली में प्रथम पुरूष (मै) अर्थात कोई एक प्रमुख पात्र सारे उपन्यास का कथानक और उससे संबंधित अन्य सभी बातें उपस्थित करता है। प्रथम पुरूष द्वारा उपन्यास की कथा वस्तु अधिक वास्तविक प्रतीत होती है। स्वातंत्र्योत्तर युग में इस शैली का अधिक विकास हुआ है। उर्दू की प्रसिद्ध कृति श्उमराव जान अयाश, मराठी का श्पण लक्षात कोण घेतोश (हरिनारायण आप्टे) उपन्यास इस शैली में लिखे गए है। हिन्दी में इस शैली में लिखा गया सर्वप्रथम उपन्यास वृंदावन सहाय का श्सौन्दर्योपासकश है। साठोत्तरी उपन्यासों में इस शैली का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है।

शिल्प विधान एवं शिल्प वैशिष्ट्य

कथा–साहित्य का शिल्प विधान कल्पना और यथार्थ के ताने बाने से बुना जाता है। जिसमें कथ्य, पात्र, परिवेश, कथोपकथन, सोद्देश्यता एवं भाषा–शैली आदि तत्वों का विवेचन किया जाता है। साहित्य में शिल्प व्यापक अर्थों में प्रयुक्त होता है। मानव की अनुभूतियाँ सदैव एक जैसी नह, रहती हैं। समय के साथ ही भाव भी बदलते रहते हैं और कला को अनेक विषय तथा सामाग्री मिलती है।

युगीन प्रवृत्तियों और रचनागत विशिष्टताओं के अनुरूप शिल्पविधान में परिवर्तन होता रहता है । आधुनिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव उपन्यासों की संरचना और कथ्य दोनों पर पड़ा है। बच्चन जी के अनुसार – ष्लेखकों में अन्तर्मुखता बढ़ी, कलात्मक रूझानों के प्रति अधिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सजगता आई। वे तकनीकी प्रदर्शन की ओर उन्मुख हुए। आंतरिक संशयग्रस्तता का गुंजलक और कस गया। साहित्य में अंधकार, पलायन, व्यक्तित्व विभाजन की अनुगूंज सुनाई पड़ने लगी। उपन्यासों के विन्यास संरचना में गहरा बदलाव आया। अपनी शैली को तोडकर नई–नई शैलियों का अन्वेषण होने लगी।(82) शैलेश मटियानी का श्कबूतर खानाश (1960), अज्ञेय का श्अपने–अपने अजनबीश (1961),अमृतलाल नागर का श्अमृत और विषश (1966), तथा मानस का श्हंसश (1972),राही मासूम रजा का 'आधा गाँवश (1966), श्रीलाल शुक्ल का श्राग–दरबारीश (1968), बदी उज्जमा का 'एक चूहे की मौतश (1971), जगदम्बाप्रसाद दीक्षित का श्मुरदाघरश (1974), देवेश ठाकुर का श्काँचघरश (1982), कुरू–कुरू स्वाहा(1980) अब्दुल बिस्मिल्लाह का झीनी झीनीबीनी चदरियाश (1986), तथा अलका सरावगी का श्कलिकथारू वाया बाई पासश आदि उपन्यासों में शिल्प के क्षेत्र में नवीन प्रयोग किये गये हैं।

उपसंहार

कथ्य के अनुरूप भाषा का प्रयोग करने में कृष्णा सोबती अतुलनीय क्षमता रखती है। कभी देशज शब्दों से युक्त शुद्ध ग्रामीण बोली का प्रयोग किया है। कहीं कहीं पर महानगरीय वातावरण को रूपायित करने के लिए परिनिष्ठित हिन्दी का प्रयोग किया है। संक्षेप में, कृष्णा जी की हर रचना भाषा में उनकी निपुणता का परिचायक है। कृष्णा सोबती का स्वस्थ लेखन ही उनके सफल जीवन का परिचायक है। कृष्णा जी के उपन्यासों में भाषा की शुद्धता का आग्रह दिखाई नहीं देता। अंग्रेजी, उर्दू के शब्द और वाक्य उनकी औपन्यासिक कृतियों की भाषा में घुल–मिल गए है। कई अंग्रेजी शब्दों का हिन्दीकरण भी प्रयुक्त हो चुका है। मुहावरेदार भाषा परिलक्षित होती है। मुहावरों में सोबती जी के अनेक अनेक मौलिक प्रयोग देखे जा सकते हैं। शब्द प्रयोग की कुछ अन्य विशेषताएँ भी दृष्टिगोचर होती है। कई शब्दप्रयोग प्रत्येक आधे शब्द पर बल देकर उसे पूरा बना देते हैं। कई उपन्यासों की शैली व्यंग्यात्मक और नाटकीय है। वहाँ भावुकता का आवरण न होकर जोश और उत्तेजना का मर्दाना स्वर मुख्य रूप से उभर आता है। कृष्णा जी के उपन्यास महाकाव्यात्मक और लघु उपन्यासों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। अपने उपन्यास लेखन में कृष्णा जी ने शहरी एवं ग्रामीण परिवेश तथा समाज जीवन को सहजता तथा यथार्थ रूप से उजागर किया है और हिन्दी उपन्यास साहित्य को यही उनकी देन है।ृतीक योजना से भाषा की शक्ति दिगुनी हो जाती है। कृष्णा जी ने अपने उपन्यासों में अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। कृष्णाजी ने 'समय सरगम' और 'ज़िन्दगीनामा' में काव्यात्मक संवेदना से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। 'समय सरगम' की भाषा कविता के निकट होने के कारण रोचक एवं प्रभावशाली है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 7, July 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अरविंद त्रिपाठी के अनुसार – "इसमें भाषा की कंटीली झाडियों के बीच कविता का नरगिस फूल मुस्कुराता मिलेगा।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि